International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-2 March-April- 2022 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

दिल्ली के मध्यकालीन स्मारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पिंटू
रिसर्च स्कॉलर
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय चूरु राजस्थान

डॉक्टर जयवीर सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
ओ.पी.जे.एस. विश्वविद्यालय चूरु राजस्थान

सार

दिल्ली के इतिहास के विवरणों को पुरातात्विक खोजों और उससे सम्बंधित तथ्य संकलन के द्वारा और अधिक व्यापक बनाने की आवश्यकता है दिल्ली के ये लोकप्रिय स्मारक विशेष स्थापत्य और ऐतिहासिक महत्व रखते हैं और ये दिल्ली को दुनिया के सबसे वांछित पर्यटन स्थलों में से एक हैं। दिल्ली के स्मारक अपनी भव्य वास्तुकला और शानदार नक्काशी के लिए जाने जाता हैं। यह शहर भारत के एक प्रमुख सांस्कृतिक, वाणिज्यिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।

मुख्य शब्द: *स्मारक , स्थापत्य*

प्रस्तावना

दिल्ली दुनिया के महान शहरों में से एक है। इस प्राचीन भूमि की एक परंपरा है जो लगभग 3,000 साल पहले महाभारत महाकाव्य की पौराणिक युग में याद आती है। यहाँ की संस्कृति आधुनिक सभ्यता से बहुत पहले उच्च बिंदु तक पहुँच गई। दिल्ली रणनीतिक रूप से अरावली पहाड़ियों और जुम्ना नदी के बीच स्थित है। एक विशाल प्रवासन दर के कारण, दिल्ली में एक महानगरीय सेटिंग है। इस शहर की विरासत वास्तव में बहुत बड़ी है जो भव्य मुगल किलों से लेकर विशाल मंदिरों तक उत्तम वास्तुकला को दर्शाती है। यूरोपीय शैली में बने भव्य औपनिवेशिक भवनों को मध्य दिल्ली क्षेत्र को बिताते हुए पाया जा सकता है। दिल्ली के स्मारक अपनी भव्य वास्तुकला और शानदार नक्काशी के लिए जाने जाते हैं। यह दिल्ली सल्तनत के उदय के बाद था, यह शहर भारत के एक प्रमुख सांस्कृतिक, वाणिज्यिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ। दिल्ली में कई प्राचीन और मध्यकालीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल हैं।दिल्ली में कई प्रसिद्ध किले, मस्जिद और अन्य ऐतिहासिक स्मारक हैं, जो स्पष्ट रूप से भारत के समृद्ध इतिहास को दर्शाते हैं।दिल्ली में राजसी लाल किला, हुमायूँ का मकबरा और कुतुब मीनार हैं जिन्हें यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है। पुराना किला दिल्ली के प्राचीन स्मारकों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि पांडवों ने पुराने किले के इस स्थान पर अपनी राजधानी इंद्रप्रस्थ का निर्माण किया था। यह किला, अब खंडहर में, कई बादशाहों के लिए प्रशासन का स्थान था। यह भी कहा जाता है कि पौराणिक पृथ्वीराज चौहान ने यहां से शासन किया था। इसे मध्यकालीन सैन्य वास्तुकला का एक बेहतरीन उदाहरण भी कहा जाता है। दिल्ली का एक और सबसे लोकप्रिय स्थल कुतुब मीनार है। इसे 1199 ईस्वी में एक मुस्लिम राजा, कुतुब–उद–दीन ने बनवाया था।

दिल्ली स्थित मध्यकालीन स्मारक

भारतीय वास्तुकला पर मुसलमानों के आक्रमणों का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा, क्योंकि जिस सभ्यता से मुस्लिम सभ्यता की टक्कर हुई, किसी से उसका इतना विरोध नहीं था जितना भारतीय सभ्यता से। चिर प्रतिष्ठित भारतीय सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों की तुलना में मुस्लिम सभ्यता बिलकुल नई तो थी ही, उसके मौलिक सिद्धांत भी भिन्न थे। दोनों का संघर्ष यथार्थवाद का आदर्शवाद से, वास्तविकता का स्वप्नदर्शिता से और व्यक्त का अव्यक्त से संघर्ष था, जिसका प्रमाण मस्जिद और मंदिर के भेद में स्पष्ट है। मस्जिदें खुली हुई होती हैं, उनका केंद्र सुदूर मक्का की दिशा में होता है; जबकि मंदिर रहस्य का घर होता है, जिसका केंद्र अनेक दीवारों एवं गलियारों से घिरा हुआ बीच का देवस्थान या गर्भगृह होता है। मस्जिद की दीवारें प्रायरू सादी या पवित्र आयतों से उत्कीर्ण होती हैं, उनमें मानव आकृतियों का चित्रण निषिद्ध होता है; जबकि मंदिरों की दीवारों में मूर्तिकला और मानवाकृति चित्रण उच्चतम शिखर पर पहुँचा, पर लिखाई का नाम न था। पत्थरों के सहज रंगों में ही इस चित्रण द्वारा मंदिरों की सजीवता आई जबकि मस्जिदों में रंगबिरंगे पत्थरों, संगमरमर और चित्र विचित्र पलस्तर के द्वारा दीवारें मुखर की गई। गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत पर एक ही प्रकार की भारी भरकम संरचनाएँ खड़ी करने में सिद्धहस्त, भारतीय कारीगरों की युगों युगों से एक ही लीक पर पड़ी, निष्प्रवाह प्रतिभा, विजेताओं द्वारा अन्य देशों से लाए हुए नए सिद्धांत, नई पद्धतियाँ और नई दिशा पाकर स्फूर्त हो उठी। फलस्वरूप धार्मिक इमारतों, जैसे मस्जिदों, मकबरों, रौजों और दरगाहों के अतिरिक्त अन्य अनेक प्रकार की धर्मनिरपेक्ष इमारतें भी, जैसे महल, मंडप, नगरद्वार, कूप, उद्यान और बड़े बड़े किले, यहाँ तक कि सारा शहर घेरनेवाले परकोटे तक तैयार हुए। देश में उत्तर से दक्षिण तक जैसे जैसे मुस्लिम प्रभुत्व बढ़ता गया , वास्तुकला का युग भी बदलता गया।

उद्देश्य

1ण दिल्ली में मध्यकालीन स्मारकों में अध्ययन करने के लिए
2ण मुस्लिम वास्तुकला में अध्ययन करने के लिए

मुस्लिम वास्तु के क्रमिक चरण:

मुस्लिम वास्तु के तीन क्रमिक चरण स्पष्ट हैं। पहला चरण, जो बहुत थोड़े समय रहा, विजयदर्प और धर्मांधता से प्रेरित षनिर्मूलनष का था, जिसके बारे में हसन निज़ामी लिखता है कि प्रत्येक किला जीतने के बाद उसके स्तंभ और नींव तक महाकाय हाथियों के पैरों तले रौंदवाकर धूल में मिला देने का रिवाज था। अनेक दुर्ग, नगर और मंदिर इसी प्रकार अस्तित्वहीन किए गए। तदनंतर दूसरा चरण सोद्देश्य और आंशिक विध्वंस का आया, जिसमें इमारतें इसलिए तोड़ी गईं कि विजेताओं की मस्जिदों और मकबरों के लिए तैयार माल उपलब्ध हो सके। बड़ी–बड़ी धरने और स्तम्भ अपने स्थान से हटाकर नई जगह ले जाने के लिए भी हाथियों का ही प्रयोग हुआ। प्रायरू इसी काल में मंदिरों को विशेष क्षति पहुँची, जो विजित प्रांतों की नई नई राजधानियों के निर्माण के लिए तैयार धरन (ठमंउ) संरचना इंजीनियरी में प्रायरू लकड़ी आदि के उस अवयव को कहते हैं जो इमारत में किसी पाट पर छत (पाटन) आदि का कोई भारी बोझ अपनी लंबाई पर धारण करते हुए उसे अपने दोनों मिरों द्वारा सुस्थिर आधारों (आलंवों) तक पहुँचता है। लकड़ी के अतिरिक्त अन्य पदार्थों की भी धरनें बनती हैं। माल की खान बन गए और उत्तर भारत से हिंदू वास्तु की प्रायरू सफ़ाई ही हो गई। अंतिम चरण तब आरंभ हुआ, जब आक्रांता अनेक भागों में भली भाँति जग गए थे और उन्होंने प्रत्यवस्थापन के बजाय योजनाबद्ध निर्माण द्वारा सुविन्यस्त और उत्कृष्ट वास्तुकृतियाँ प्रस्तुत की।

मुस्लिम वास्तुकलाः

बारहवीं शताब्दी के अंत से पूर्व दिल्ली पर हिन्दू राजाओं ने राज्य किया और उसके उपरान्त राजपूत राज्यों के अवशेषों पर तुर्कों ने अपना प्रथम राज्य स्थापित किया। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यद्यपि मुग़लों की शक्ति में क्षीणता आ गयी थी परन्तु फिर भी परवर्ती मुग़ल शासकों ने 1857 तक शासन किया। 1803 में अंग्रेजों ने दिल्ली में प्रवेश किया और 1857 के विद्रोह के उपरान्त अंतिम मुग़ल शासक के पदच्युत किये जाने तक इन नाममात्र के शासकों के संरक्षक बनकर अपनी शासन नीति का प्रयोग किया। इस प्रकार मुस्लिमकाल या मध्यकाल हिंदुकाल के बाद से प्रारंभ होकर ब्रिटिशकाल तक माना जाता है। यह काल 664 वर्षों तक रहा। इस काल को लगभग सामान दो भागों में बांटा जा सकता है , प्रथम 1193 से 1526 ई. तक जिसमें पांच अलग–अलग राजवंशों ने दिल्ली पर शासन किया , द्वितीय 1526 से 1857 तक जहाँ मुग़लों का शासन रहा। इस आधार पर मध्यकालीन स्थापत्य कला को हम दो भागों में बाँट सकते हैं –

1. सल्तनतकालीन स्थापत्य कला।
2. मुग़लकालीन स्थापत्य कला।

उस समय ने कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहरें हमें प्रदान की हैं। विभिन्न राजाओं द्वारा बनवाई गयी धरोहरें जिनके द्वारा आज भी दिल्ली को जाना पहचाना जाता है, इस प्रकार हैं

- **सल्तनतकालीन स्थापत्य कलाः**

सल्तनतकाल में जितना विकास स्थापत्य कला का हुआ उतना और किसी ललित कला का नहीं हुआ। अन्य कलाओं के विकसित न होने का कारण मुसलमानों की धार्मिक कट्टर भावना थी। डॉ.ए.एल.श्रीवास्तव का कहना है कि सल्तनत युग में स्थापत्य कला के अतिरिक्त अन्य किसी कला के विकास का हमें कोई प्रमाण नहीं मिलता। यत्र–तत्र एक दो उल्लेख अवश्य आ जाते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि शोभा के लिए विभिन्न प्रकार की डिजाइनें दीवारों पर चित्रित की जाती थीं। इनकी स्थापत्य शैली मौलिक रूप से अरबी शैली नहीं कही जा सकती, क्योंकि उस शैली में ईरान, अफगानिस्तान, मेसोपोटामिया, ट्रांसआक्सियाना तथा उत्तरी अफ्रीका की स्थापत्य शैलियों का मिश्रण था।भारत में भी यह शैली अपनी मौलिकता को बनाये नहीं रख सकी। उसे भारतीय स्थापत्य शैली के अनेक तत्वों को अपने में मिलाना पड़ा। इस प्रकार स्पष्ट है कि 12वीं शताब्दी के अंतिम दशक में तुर्की विजेता स्थापत्य कला की जो शैली भारत में अपने साथ लाये थे, वह न तो पूर्ण रूप से इस्लामी थी और न अरबी। तुर्क अफगानों ने जो इमारतें निर्मित करवाईं उनमें मुख्यतः मस्जिदें, मकबरें, मदरसे तथा दुर्ग हैं। जिनमें दुर्ग तो अधिकांशतः नष्ट हो गए हैं परन्तु मस्जिदें व मकबरें आज भी देखे जा सकते हैं। सल्तनतकालीन स्थापत्य कला में भारतीय एवं इस्लामी दोनों प्रभावों का सम्मिश्रण देखने को मिलता है इसीलिए यह हिन्द–इस्लामी शैली कहलाती है। इस शैली की प्रमुख विशेषताएं हैंरू

- मेहराब व गुम्बदों का प्रयोग, जिसे अरबों ने मुख्यतः रोम से ग्रहण किया था।
- इस शैली में भारतीय क्षैतिज शैली व इस्लामी मेराब धरनी का सुन्दर एवं संतुलित सम्मिश्रण था।
- कुछ स्थानों पर अलंकरण का भी प्रयोग किया गया है।
- मीनारें नीचे से मोटी व चौड़ी और ऊपर से पतली।
- विशाल फाटक जिन पर कुरान की आयतें उद्धृत हैं।

- कुर्सी की ऊंचाई अधिक, नीचे तहखानें।
- बुनियादी दीवारें चौड़ी तथा सुदृढ़।
- प्रत्येक भाग में समरूपता।
- छज्जों का प्रयोग।
- छतें डाटदार हैं और उन्हें दृढ़ता से पाटा गया है।
- मस्जिदों के प्रांगण में हौज निर्मित हैं।

इण्डो–इस्लामी स्थापत्य कला का विकास क्रमिक रूप से निम्न प्रकार हुआ

- **मामलूक कालीन स्थापत्य कला:**

इण्डो–इस्लामी स्थापत्य कला का विकास क्रमिक रूप से हुआ है । इसका प्रथम चरण 1206 से 1290 ई. तक था जो इतिहास में मामलूक काल के नाम से जाना जाता है। यह सल्तनतकालीन स्थापत्य कला का आरंभिक काल था।यह काल स्थापत्य कला के विकास की प्रथम अवस्था माना जाता है। इस काल की इमारतें हिन्दू शैली के प्रत्यक्ष प्रभाव में बनी है, जिनकी दीवारें चिकनी एवं मज़बूत हैं। इस काल में बने स्तम्भ, मंदिरों के प्रतीक होते हैं। पहली बार हिन्दू कारीगरों द्वारा बरामदों में मेहराबदार दरवाज़े बनाये गये। मुसलमानों द्वारा निर्मित मस्जिदों के चारों तरफ़ मीनारें उनके उच्च विचारों का प्रतीक हैं। इस समय की दिल्ली स्थित इमारतें निम्न हैं

- कुव्वत–उल–इस्लाम मस्जिद
- कुतुबमीनार
- सुल्तान गढ़ी
- इल्तुतमिश का मकबरा
- बलबन का मकबरा

- **खिलजीकालीन स्थापत्य कला:**

इण्डो–इस्लामी स्थापत्य कला में खिलजी वंश के काल में एक नवीन अध्याय का विकास हुआ। इस समय की इमारतें सुन्दर एवं सुडौल थीं। मंदिर एवं मस्जिदों में गुम्बदों का सुन्दर प्रयोग किया गया था। खिलजी काल में दिल्ली में निर्मित भवन निम्न हैं –

- अलाई दरवाजा
- जमातखाना मस्जिद

- **तुगलककालीन स्थापत्य कला:**

सल्तनत काल में सबसे अधिक भवन निर्माण का कार्य तुगलक काल में हुआ। तुगलक कालीन भवनों में सादगी और विशालता पर विशेष बल दिया गया है। ढलुवा दीवारों का प्रयोग तुगलक वास्तुकला की प्रमुख विशेषता थी।तुगलक शासकों में फिरोज तुगलक ने भवन निर्माण में विशेष रूचि दिखाई। इसके लिए उसने एक पृथक विभाग दीवान ए–ईमारत स्थापित भी किया।फिरोज तुगलक कालीन भवनों के अलंकरण में कमल का रूपांकन इसकी एक प्रमुख विशेषता थी। तुगलक कालीन दिल्ली स्थित इमारतें निम्नलिखित हैं

- तुगलकाबाद का किला
- गयासुद्दीन का मकबरा
- आदिलाबाद का किला
- कोटला फिरोजशाह
- फिरोजशाह का मकबरा
- लाल गुम्बद (कबीरुद्दीन औलिया का मकबरा)
- खिर्की मस्जिद

➢ **लोदी कालीन स्थापत्य कला:**

इस काल में स्थापत्य कला के क्षेत्र में कोई प्रगति नजर नहीं आती किन्तु फिर भी लोदियों ने कई मकबरों व मस्जिदों का निर्माण कराया। इसीलिए लोदी काल को मकबरों का काल भी कहा जाता है। सिकंदर लोदी के समय में एक नई शैली की शुरुआत हुई जिसमें एक के स्थान पर दो गुम्बदों का निर्माण किया जाता था। लोदी काल में दो प्रकार के मकबरों का निर्माण किया जाता था।

- सुल्तानों द्वारा बनवाये गए अष्टभुजी मकबरे।
- अमीरों द्वारा बनवाये गए चतुर्भुजी मकबरे।

अष्टभुजाकार मकबरे का प्रथम प्रयोग 1368–69ई. में दिल्ली स्थित खानेजहाँ तेलंगानी के मकबरे में हुआ।इस काल की दिल्ली स्थित प्रमुख इमारतें निम्न हैं –

- मोहम्मदशाह का मकबरा
- सिकंदर लोदी का मकबरा
- मोठ की मस्जिद
- दादी–पोती का मकबरा

- **मुग़लकालीन स्थापत्य कला:**

मुग़ल स्थापत्य कला का इतिहास बाबर से प्रारंभ होकर अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के काल में अपनी चरम सीमा तक पहुँचता है। शाहजहाँ का काल स्थापत्य कला का स्वर्णिम काल कहा गया। मुग़ल स्थापत्य कला में विभिन्न क्षेत्रीय शैलियों का एकीकरण एवं ईरानी शैली की विशेषताओं का समावेश हुआ जिसके फलस्वरूप एक नई शैली का विकास हुआ जिसे विद्वानों ने मुग़ल स्थापत्य शैली, इंडो–पर्शियन शैली तथा इंडो–सार्सेनिक शैली की संज्ञा दी है। साहित्य एवं धर्म के समान कला में भी मुगलकाल पूर्णतरू नवीनता और पुनर्जागरण का युग नहीं था, बल्कि उन प्रक्रियाओं का विस्तार और चरम परिणति था, जो पिछले तुर्क–अफगान–युग में आरम्भ हुई थीं। वास्तव में 1526 ई. के बाद की कला, इसके पहले के युग की कला के समान मुस्लिम तथा हिन्दू कला परंपराओं एवं तत्वों का सम्मिश्रण है।

औरंगजेब को छोड़कर, जिसकी धार्मिक कट्टरता कला के पोषण के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकी, भारत के सभी प्रारम्भिक मुगल बादशाह महान् निर्माता थे। यद्यपि बाबर का भारतीय राज्यकाल छोटा था, फिर भी वह अपने संस्मरण (आत्मकथा) में हिन्दुस्तान की भवन निर्माण कला की आलोचना करने तथा भवननिर्माण के लिए विचार करने का समय निकाल सका। कहा जाता है कि उसने भारत में मस्जिदें तथा अन्य स्मारक बनाने के लिए कुस्तुन्तुनिया से अल्बानिया के प्रसिद्ध भवननिर्माता सीनान के शिष्यों को आमंत्रित किया। श्री पर्सी ब्राउन लिखते हैं, यह बहुत असंभाव्य है कि इस प्रस्ताव का कभी कोई परिणाम निकला हो; क्योंकि यदि उस प्रसिद्ध स्कूल का कोई भी सदस्य मुगलों के यहाँ नौकरी कर लेता, तो बाइजैण्टाइन शैली के प्रभाव के चिन्ह दिखाई देते किन्तु ऐसा कोई चिन्ह नहीं है। बाबर ने अपने भवनों के निर्माण के लिए भारतीय संगतराशों को बहाल किया। वह स्वयं अपने संस्मरण में लिखता है कि आगरे में

उसके भवनों में छः सौ अस्सी तथा सीकरी, बियाना, धौलपुर, ग्वालियर एवं किउल में उसके भवनों में लगभग पंद्रह सौ मजदूर प्रतिदिन काम करते थे। बाबर के बड़े–बड़े भवन पूर्णतरू लुप्त हो चुके हैं। तीन छोटे भवन बच रहे हैं। इनमें एक पानीपत के काबुली बाग में एक स्मारक मस्जिद है (1526); दूसरा, रूहेलखंड में सम्भल नामक स्थान पर जामी मस्जिद (1526) है तथा तीसरा, आगरे के पुराने लोदी किले के भीतर एक मस्जिद भाग्यहीन बादशाह हुमायूँ के राज्यकाल के अर्धभग्नावस्था में केवल दो भवन शेष हैं। एक भवन आगरे की मस्जिद है। दूसरा भवन पूर्वी पंजाब के हिसार जिले के फतेहाबाद में एक बड़ी और अच्छे अनुपात पर निर्मित मस्जिद है, जो फारसी ढंग के मीनाकारी किये हुए खपड़ों की सजावट के साथ लगभग 1540 ई. में बनी थी। यहाँ पर हमें यह याद रखना चाहिए कि यह फारसी, बल्कि मंगोल पद्धति पहले–पहल भारत में हुमायूँ द्वारा नहीं लायी गयी; यह पहले से ही बहमनी राज्य में पंद्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में विद्यमान थी।

भारतीय–अफगान पुनर्जीवनकर्ता शेरशाह का छोटा शासनकाल भारतीय भवन निर्माण–कला के इतिहास में संक्रान्ति का युग है। उसके द्वारा योजित दिल्ली में चहारदीवारियों से घिरी हुई राजधानी के, जो उसकी असामयिक मृत्यु के कारण पूरी नहीं की जा सकी, दो बचे हुए द्वार तथा पुराना किला नामक गढ़ कुछ काल तक प्रचलित भवन–पद्धति से अधिक परिष्कृत एवं कलात्मक रूप से अलंकृत भवन–पद्धति प्रदर्शित करते हैं। किला–ए–कुहना नामक मस्जिद को, जो 1545 ई. में दीवारों के भीतर बनी थी, उसके उज्ज्वल वास्तुकलात्मक गुणों के कारण, उत्तरी भारत के भवनों में उच्च स्थान देना चाहिए। शेरशाह का मकबरा, जो बिहार के शाहाबाद जिले के सहसराम नामक स्थान पर एक तालाब के बीच ऊँचे चबूतरे पर बना है, आकार एवं गौरव, दोनों दृष्टियों से भारतीय मुसलमानी निर्माण कला का चमत्कार है तथा हिन्दू एवं मुस्लिम वास्तुकलात्मक विचारों का आनंदजनक सम्मिश्रण प्रदर्शित करता है। इस प्रकार शासन में ही नहीं, बल्कि संस्कृति तथा कला में भी महान् अफगान ने महान् मुगल अकबर के लिए रास्ता तैयार कर दिया।

अकबर के शासनकाल में भवन–निर्माण–कला का अद्भुत विकास हुआ। बादशाह ने अपनी पहले की संपूर्णता के साथ कला के प्रत्येक ब्योरेवार विवरण का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया तथा उदार एवं समन्वयशील मन से विभिन्न साधनों से कलात्मक विचारों को ग्रहण किया। इन कलात्मक विचारों को व्यावहारिक रूप उन कुशल कारीगरों ने दिया, जिन्हें अकबर ने अपने चारों ओर एकत्रित कर रखा था। अबुल फजल उचित ही कहता है कि ष्बादशाह सुन्दर भवनों की योजना बनाता है और अपने मस्तिष्क एवं ह्रदय के विचारों को पत्थर और गारे का रूप प्रदान करता है। फर्गुसन ने ठीक ही कहा कि ष्फतेहपुर सीकरी एक महापुरुष की बौद्धिक झलक है। अकबर की क्रियाशीलता केवल वास्तुकला की परमोत्कृष्ट कृतियों तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उसने कुछ दुर्ग, ग्राम्य गृह, मीनारें, सराय, स्कूल, तालाब एवं कुएँ भी बनवाये। उसकी माँ जाम के एक फारसवासी शिया मीर बाबा दोस्त उर्फ श्मीर अली अकबरजामीश की पुत्री थी, जिससे उसने विरासत में फारसी विचार पाये और वह अभी भी उनसे चिपका रहा। फिर भी हिन्दुओं के प्रति उसकी सहनशीलता, उनकी संस्कृति से सहानुभूति तथा उन्हें अपने पक्ष में करने की नीति के कारण उसने अपने बहुत–से भवनों में वास्तुकला की हिन्दू शैलियों का व्यवहार किया। इन भवनों की सजावट की विशेषताएँ हिन्दू तथा जैन मंदिरों में पायी जाने वाली सजावट की विशेषताओं की अनुकृतियाँ हैं। इसकी अभिव्यक्ति निम्नांकित कला–कृतियों में देखी जा सकती है आगरे के किले के अन्दर जहाँगीरी महल में, जिसमें वर्गाकार स्तम्भ तथा सहारे के रूप में चोटियाँ हैं एवं हिन्दू ढंग पर बनी, (पत्थर या ईंटों की) तहाँ से शून्य, छोटी मेहराबों की पाण्डे एस.के., मध्यकालीन भारत, प्रयाग पत्तियाँ हैं; फतेहपुर सीकरी के, जो 1569 से लेकर 1584 ई. तक शाही राजधानी रही, बहुत–से भवनों में तथा लाहौर के किले में, पुरानी दिल्ली में हुमायूँ के प्रसिद्ध मकबरे तक में, जो 1569 ई. के आरम्भ में तैयार हुआ था तथा जो साधारणतः पारसी कला के प्रभावों को प्रदर्शित करता हुआ समझा जाता है, कब्र की धरातल पर की योजना भारतीय है। भवन के बाहरी भाग में उजले संगमरमर का स्वच्छन्द प्रयोग भारतीय है तथा रंग–बिरंगे खपड़ों की सजावट, जिसका पारसी भवन–निर्माता इतना अधिक व्यवहार करते थे, अनुपस्थित है। फतेहपुर सीकरी में बादशाह के सबसे शानदार भवन हैं– जोधाबाई का महल तथा दो अन्य रहने के भवन जो कुछ लोगों के कथनानुसार उसकी रानियों के रहने के लिए बनवाये गये थे; दीवाने–आम, जो हिन्दू शैली का था, जिसमें खम्भे पर निकली हुई बरामदे की छत थी; आश्चर्यजनक दीवाने–खास, जो योजना, बनावट एवं अलंकार में स्पष्ट रूप से भारतीय था; जामी मस्जिद नामक संगमरमर की मस्जिद, जिसका वर्णन फर्गुसन ने पत्थर में रूमानी कथा के रूप में किया है; बुलन्द दरवाजा, जो मस्जिद के दक्षिणी द्वार पर है तथा अकबर की गुजरात विजय के स्मारक स्वरूप संगमरमर तथा बलुआ पत्थर से बनाया गया है तथा पंचमहल,

जो पिरामिड के आकार का पाँच महलों का था और भारतीय बौद्ध विहारों की, जो अब तक भारत के कुछ भागों में वर्तमान है, योजना का प्रसार था। उस युग के दो अन्य उल्लेखनीय भवन हैं– इलाहाबाद में चालीस स्तम्भों का राजमहल तथा सिकन्दरा में अकबर का मकबरा। इलाहाबाद का राजमहल, जिसके निर्माण में विलियम पिंच के लेखानुसार चालीस वर्ष लगे तथा विभिन्न वर्गों के पाँच हजार से लेकर बीस हजार तक मजदूर लगाये गये निश्चित रूप में भारतीय ढंग का है तथा उसमें हिन्दू स्तम्भों की पंक्तियों पर आधारित बाहर निकली हुई बरामदे की छत है। सिकन्दरा में अकबर के मकबरे के विशालकाय ढाँचे में, जिसकी योजना बादशाह के जीवन–काल में बनी थी,

किन्तु जो 1605 तथा 1613 के बीच निर्मित हुआ था, पाँच चबूतरे हैं, जो सफेद संगमरमर के सबसे ऊपरी महल तक एक गुम्बजदार छत के साथ ऊपर बढ़ने में एक के–बाद दूसरे घटते जाते हैं तथा यह समझा जाता है कि स्मारक के ऊपर एक केन्द्रीय गुम्बज बनवाने का विचार था। इस भवन का भारतीय ढंग भारत के बौद्ध विहारों से तथा संभवतरू कोचीन–चीन में प्रचलित खमेर वास्तुकला से भी प्रेरित था। जहाँगीर के शासनकाल में, उसके पिता के वास्तुकला–विषयक कार्य को ध्यान में रखते हुए, बहुत कम इमारतें बनीं किन्तु उसके समय की दो इमारतें विशेष आकर्षण की हैं। एक है अकबर का मकबरा, जिसकी खास विशेषताओं की चर्चा पहले की जा चुकी है। दूसरी है आगरे

में इतमाद–उद–दौला की कब्र, जिसे उसकी पुत्री तथा जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ ने बनवाया। यह कब्र बिल्कुल उजले संगमरमर की बनी हुई थी तथा संगमरमर में जडित कम मूल्य वाले पत्थरों से सजी हुई थी। इस काम का एक पहले का नमूना हम उदयपुर के गोलमण्डल मंदिर में पाते हैं (1600 ई. से)। अतरू यह एक राजपूत शैली थी या सम्भवतः एक पुरानी भारतीय शैली थी। इसके विषय में पर्सी ब्राउन ने कहा भी है कि ष्इतमाद–उद–दौला के प्रत्येक कोने से मुग़ल काल की सर्वग्राही आदर्शमयी सौन्दर्य भावना टपकती है।ष

शाहजहाँ बहुत बड़ा निर्माता था। उसके कारण बहुत– से भवन, राजमहल, किले, उद्यान तथा मस्जिदें आगरा, दिल्ली, लाहौर, काबुल, कश्मीर, कंधार, अजमेर, अहमदाबाद, मुखलिसपुर तथा अन्य स्थानों में पायी जाती हैं। यद्यपि इन इमारतों पर किये गये खर्च का पक्का अंदाज लगाना सम्भव नहीं, फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि इन पर कई दर्जन करोड़ रुपये लगे होंगे। अकबर की इमारतों की तुलना में शाहजहाँ की इमारतें चमक–दमक एवं मौलिकता में घटिया हैं, परन्तु अति व्ययपूर्ण प्रदर्शन एवं समृद्ध और कौशलपूर्ण सजावट में वे बढ़ी हुई हैं, जिससे शाहजहाँ की वास्तुकला एक अधिक बड़े पैमाने पर रत्नो के सजाने की कला बन जाती है। यह विशेष रूप से दीवाने–आम एवं दीवाने–खास जैसे उसके दिल्ली के भवनों में देखी जा सकती हैं।

शाहजहाँ के द्वारा अपनी प्रिय पत्नी मुमताजमहल की कब्र पर बनवाया गया शानदार मकबरा ताजमहल जिसके निर्माण में उस समय 50 लाख रुपए लगे थे उचित ही अपनी सुन्दरता एवं वैभव के लिए संसार का एक आश्चर्य बन जाता है। ताज की योजना बनाने वाले और इसके निर्माण करने वाले कारीगरों के विषय में स्मिथ का विचार है कि यह यूरोपीय और एशियाई प्रतिभा के सम्मिश्रण की उपज है। परन्तु मोइनुद्दीन अहमद ने इस पर आपत्ति की है तथा वे अपने विवेकपूर्ण तर्क देकर हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि दाम्पत्य प्रेम के इस महान् स्मारक की योजना या निर्माण में इटली वाले अथवा फ्रांसीसी वास्तुकारों का कोई हाथ न था। वे इसकी योजना का श्रेय उस्ताद ईसा को देते हैं। ताज का अध्ययन करते समय भारतीय कला के विद्यार्थी को कुछ बातें नहीं भूलनी चाहियें। प्रथमतरू इसकी योजना तथा प्रमुख विशेषताएँ एकदम नयी नहीं थीं, क्योंकि शेर के मकबरे से लेकर हुमायूँ की कब्र तथा बीजापुर के स्मारकों को देखते

हुए, शैली का उतार आसानी से दृष्टिगोचर होता है। यहाँ तक कि संगमरमर तथा अन्य पत्थरों में बेल–बूटे का काम तथा संगमरमर में बहुमूल्य पत्थरों के जड़ने की कला भी पहले से ही पश्चिमी भारत एवं राजपूत कला में उपस्थित थी। दूसरे, उजले संगमरमर के प्रचुर मात्रा में प्रयोग तथा भारतीय ढंग की कुछ सजावटों से पता चलता है कि शाहजहाँ की इमारतों पर पारसी प्रभाव की उतनी बहुलता नहीं थी, जितनी कि सामान्यतः सोची जाती है। तीसरे, मुगलकाल में भारत का पश्चिमी जगत् विशेष रूप से भूमध्य सागरीय क्षेत्र के साथ सम्बन्ध का ध्यान रखते हुए यह विश्वास करना ऐतिहासिक रूप से असंगत नहीं होगा कि सोलहवीं और सत्रहवीं सदियों में भारत की कला पर पश्चिमी जगत् की कला के कुछ तत्वों का प्रभाव था तथा तत्कालीन भारत के विभिन्न भागों में कुछ यूरोपीय निर्माता विद्यमान् थे।

जहाँगीर का मकबरा, जिसे शाहजहाँ ने आरम्भ में ही लाहौर में शाहदरा नामक स्थान में बनवाया था, यद्यपि ताज के समान प्रसिद्ध नहीं है, तथापि कला का एक सुन्दर नमूना है। इस राज्यकाल की दूसरी प्रसिद्ध कला की कृति थी मयूर सिंहासन (तख्ते ताऊस)। सिंहासन सुनहले पाँवों पर एक खाट के रूप में था। मीनाकारी किया हुआ चंदवा पन्ने के बारह स्तम्भों पर आधारित था। प्रत्येक स्तम्भ पर रत्नों से जड़े दो मयूर थे। प्रत्येक जोडे पक्षियों के बीच हीरों, पन्नों, लाल मणियों तथा मोतियों से आच्छादित एक वृक्ष था। नादिरशाह इस सिंहासन को 1739 ई. में फारस ले गया परन्तु दुर्भाग्यवश अब यह इस संसार में कहीं नहीं है।

औरंगजेब के शासनकाल में भवन–निर्माण–कला की शैली का ह्रास होने लगा। यह कट्टर बादशाह प्रत्यक्ष रूप में भवन–निर्माण–कला के विरुद्ध तो था ही, तो उसने अपने पूर्वगामियों के विपरीत इसे प्रोत्साहन देना या भवनों का

निर्माण करना भी बंद कर दिया। उसके राज्यकाल की जो कुछ भी इमारतें हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण थी लाहौर मस्जिद, जो 1674 ई. में पूरी हुई थी, किन्तु यह दिल्ली की जामा मस्जिद की भद्दी नकल मात्र है।10 शीघ्र भारतीय कलाकारों की रचनात्मक प्रतिभा अधिकतर लुप्त हो गयी और अठारहवीं सदी में एवं उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में आंशिक रूप में अवध तथा हैदराबाद में शेष रहीं।

मुगल वास्तुकला के अभिलक्षणिक अवयव हैं –

1ण झरोखा
2ण छतरी
3ण छज्जा
4ण जाली
5ण गुलदस्ता
6ण चारबाग

दिल्ली स्थित मुगलकालीन स्मारक निम्न हैं –

- हुमांयू द्वारा बनवाया गया दीनपनाह नामक नगर जिसे पांचवीं दिल्ली भी कहा जाता है।
- शेरशाह ने शेरगढ़ या दिल्ली शेरशाही नामक नगर बसाया इसे छठी दिल्ली भी कहा जाता है। शेरशाह ने दिल्ली के पुराने किले के भीतर किला–ए–कुहना नामक मस्जिद का निर्माण करवाया।
- अकबर ने दिल्ली में एकमात्र हुमांयू का मकबरा निर्मित कराया।
- जहाँगीर के काल में दिल्ली विशेष में कोई निर्माणकार्य नहीं हुआ।

शाहजहाँ के काल में स्थापत्य कला की कुछ विशिष्ट शैलियाँ विकसित हुईं। दांतेदार मेहराब, बल्वाकार एवं ऊँचा उठा हुआ दोहरा गुम्बद तथा बहुमूल्य रंगीन पत्थरों का प्रयोग ऐसी कुछ विशेषताएँ थी। दिल्ली में शाहजहाँ द्वारा निर्मित इमारतों में जामा मस्जिद, लाल किला तथा लाल किले के अन्दर दीवान–ए–आम, मुमताज का ख़ास महल, रंग महल या इम्तियाज महल स्मरणीय हैं।

औरंगजेब के काल में मुग़ल स्थापत्य कला का पतन प्रारंभ हो गया। अपने शासन काल में उसने जिन भवनों का निर्माण करवाया गुणवत्ता की दृष्टि से वे बहुत निम्न कोटि की हैं। दिल्ली में औरंगजेब ने मोती मस्जिद का निर्माण करवाया जोकि लाल किले के अन्दर स्थित है व संगमरमर से निर्मित है। उसके पश्चात् मुगलकालीन स्थापत्य में कोई विशेष उल्लेखनीय कार्य नहीं हुआ।

दिल्ली स्थित मध्यकालीन स्मारकों की वर्तमान स्थिति

हमारी विरासतें ही हमारी पहचान हैं। हम अपनी ऐतिहासिक इमारतों में अपने पूर्वजों की विरासत की झलक देखते हैं। हमें तब के देशकाल एवं परिस्थितियों के बारे में जानकारी हमारी विरासतों से ही प्राप्त होती है। इन विरासतों की देखभाल व सुरक्षा करना भी हमारा ही कर्तव्य है, तो यह आवश्यक हो जाता है की हमें यह ज्ञात हो कि हमारे स्मारक वर्तमान में किस स्थिति में हैं।

जैसे

कूतब प्रांगण

कुतुब प्रांगण आज के समय में देशी के साथ–साथ विदेशी पर्यटकों के लिए भी मुख्य आकर्षण का केंद्र है। यह सुबह 6am- से 6pm. तक खुलता है। भारतीयों के लिए प्रतिव्यक्ति शुल्क 30/–व विदेशी पर्यटकों के लिए 500/–,सामान रखने व पार्किंगकी भी समुचित व्यवस्था की गयी है। कुतुब प्रांगण में साफ–सफाई का भी पूर्ण ध्यान रखा जा रहा है। इस क्षेत्र में पर्यटक भी अधिकांशतः शिक्षित हुए प्रतीत होते हैं कि अपने स्मारकों की साफ–सफाई का हमें उचित ध्यान रखनाचाहिये। मैंने वहां कुछ पर्यटकों से बात की जोकि पहले भी इस स्मारक काभ्रमण कर चुके थे तो उनकी बातों से ज्ञात हुआपहले यहाँ इतनी स्वच्छतानहीं थी परन्तुअबस्वच्छता का वस्मारक नष्ट नहों इसकासमुचित प्रयास किया जा रहा है।

कुतुबमीनार

कुतुबमीनार इतनी पुरानी ईमारत होने के बावजूद भी भली–भांति संरक्षित है। इसमें अन्दर जाना अब निषेधित है। जो इस इमारत के ऊपर सजावट की हुई है व कुरान की आयतें खुदी हुई हैं आज भी सुन्दर व स्पष्ट प्रतीत होती हैं। कुतुबमीनार भारत में पत्थर से बनी सबसे ऊँची मीनार है। कुतुबमीनार व कुतुब प्रांगण में स्थित अन्य ऐतिहासिक इमारतें विश्व धरोहरों में शामिल हैं, जिनके संरक्षण का कार्य "भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग संभालता है।

अलाई दरवाजा

कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद के दक्षिण में स्थित अलाई दरवाजा वास्तुकला का एक अद्भुत उदाहरण है। यह अभी भी भली–भांति संरक्षित है। यह पूर्णतः इस्लामिक वास्तुकला की यथार्थता और ज्यामितीय पद्धति पर बनी सर्वप्रथम इमारत है। जिसमें खिलजी शैली के अनेक लक्षण हैं यथा– चौड़ा और उभरा गुम्बदर, घोड़े की नाल के आकार के नुकीले मेहराब, इसकी सुन्दर ज्यामितीय नक्काशी की गयी पट्टिकाएं,सफ़ेद संगमरमर और लाल बलुआ पत्थर में की गयी सजावट इसे बहुत ही मनमोहक एवं सुन्दर बनाते हैं।यह नीचे से चौकोर है पर ऊपर जाकर यह आठ कोनों वाली हो गयी है। दरवाजे पर कुरान की आयतें खुदी हुई हैं,बेलबूटे बने हुए हैं व नक्काशी काखूबसूरत काम किया हुआहै।

उपसंहार

दिल्ली के इतिहास के विवरणों को पुरातात्विक खोजों और उससे सम्बंधित तथ्य संकलन के द्वारा और अधिक व्यापक बनाने की आवश्यकता है । शहरीकरण की वर्तमान प्रक्रिया में नये–नये निर्माण से शहर के ऐतिहासिक अवशेषों और धरोहरों के नष्टऔर विलुप्त हो जाने का खतरा है । एक आधुनिक शहर के विकासक्रम में इसके आधुनिकीकरण की आवश्यकता को समझते हुए हमें एक संतुलन बनाने के बारे में सोचना होगा जिसमें आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और पुरातात्विक व ऐतिहासिक अवशेषों का संरक्षण दोनों संभव हों। क्योंकी हमारी विरासतें ही हमारी पहचान हैं। दिल्ली के ये लोकप्रिय स्मारक विशेष स्थापत्य और ऐतिहासिक महत्व रखते हैं और ये दिल्ली को दुनिया के सबसे वांछित पर्यटन स्थलों में से एक बनाते हैं।

संदर्भ

[1] दयाल, महेश्वर , दिल्ली जो एक शहर है, हिन्दी अकादमी, दिल्ली, 1991. 28. दिल्ली के स्मारक,भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,नई दिल्ली,2011.
[2] ब्लेक, स्टीफन पी., शाहजहाँनाबाद दि सोवरेन सिटी इन मुग़ल इंडिया 1639 1739, नई दिल्ली, 2013.
[3] सैंडरसन , गार्डन, दिल्ली फोर्ट रू अगाइड टू दि बिल्डिंग्स एंड गार्डन्स,मद्रास, 2010.
[4] फर्गुसन,जेम्स, हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन एंड ईस्टर्न आर्किटेक्चर,लंदन,1876.
[5] महाजन विद्याधर,मध्य–कालीन भारत,एस.चन्द एंड कम्पनी लि.,रामनगर नईदिल्ली,2018,
[6] एलियट, एच. एंड जॉन डासन (सं.), दि हिस्ट्री ऑफ़ इंडिया एज़ टोल्ड बाय इट्स ओन हिस्टोरियंस,दि मुहम्मडन पीरियड,खंड–3,लन्दन,2019.
[7] कौशिक, डा.जय नारायण, दिल्ली की अपनी कहानी(वैदिक युग से अद्यतन),हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2018 .
[8] मिश्र, डा.रतन लाल, स्मारकों का इतिहास एवं स्थापत्य कला, ईना श्री पब्लिशर्स, जयपुर, 2008 .
[9] ब्राउन, पर्सी, इंडियन आर्किटेक्चर (इस्लाम पीरियड), मुंबई, 2016.
[10] तिललोतसन, जी.एच.आर. मुग़ल इंडिया, लंदन, 2020.
[11] वाजपेयी कृष्ण दत्त, ष्भारतीय वास्तुकला का इतिहासष, 1972,हिंदी समिति लखनऊ.
[12] वाई.डी.शर्मा ,दिल्ली एंड इट्स नेबरहुड,2012.
[13] अतुल्य भारत,जुलाई–सितम्बर 2015,पर्यटन मंत्रालय,भारत सरकारनई दिल्ली।
[14] राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 पर्यटन विभाग, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार।
[15] शर्मा, अतुल,आर्थिक विकास में पर्यटन का योगदान,2012, ईशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।